# Does the Bible Really Matter Anymore?

## क्या अब बाइबल सच में कोई मायने रखती है?

हम एक ऐसी पीढ़ी के लोग हैं, जो अनुग्रह के बारे में एक दूषित/भ्रमित विचार द्वारा नष्ट हो रहे हैं। हमारे दिमागों/मनों के अनुसार "अनुग्रह" सभी चीज़ों में है अर्थात् अनुग्रह में सब कुछ ढांपा हुआ है। यह हमारे प्रतिदिन के बाइबल को पढ़ने के समय की जानबूझकर अवहेलना/नज़रअंदाज करने वाले पाप को भी ढांपता है। अर्थात् वह समय जब हम उससे बात करते हैं जिसे हम प्रेम करते हैं। यह हमारी उन अवहेलनाओं/पापों को भी ढांपता/कवर करता है जिनके विषय में बाइबल कहती है कि हमें यह नहीं करना है और हम भी इस बात को जानते है। यह मसीहियों और कलीसियाओं के कंजूसी/लोभी तरीकों को भी ढांपता है जिसमें वे इस बात पर ज़ोर देते है कि परमेश्वर अपनी संतानों को इसलिए देता है कि वे उसे उसके स्वरूप और राज्य के विस्तार के लिए खर्च करें। हम यह कह सकते हैं कि "अनुग्रह" मेरा एक ऐसा लाइसेंस है जिसके द्वारा मैं जैसे चाहूँ वैसे रह सकता हूँ क्योंकि मैं मसीह का हूँ!

इसके परिणाम स्वरूप हम नाखुश, अनाज्ञाकारी और उस परिपूर्णता से अनजान है जिसे परमेश्वर ने हमारे लिए रचा/बनाया है। हमें अपने जीवनों को इस प्रकार के अनुग्रह पर नहीं बनाना चाहिए।

मेलमिलाप का अनुग्रह (वरदान) जिसे परमेश्वर ने अपनी दया द्वारा हमें सुसमाचार में दिया है वह उसके पुत्र के विषय में है, **जिसके द्वारा उसने हमें नया और अनन्त जीवन दिया है।** यह नया और अनन्त जीवन परमेश्वर के वचन से परमेश्वर के आत्मा की सेवकाई द्वारा और परमेश्वर के लोगों के सक्रिय सहयोग से बनना चाहिए। परमेश्वर का सच्चा अनुग्रह सक्रिय है जो उन लोगों में अद्भूत नये जीवन का निर्माण कर रहा है जो यीशु के पास नया जन्म पाने के लिए आते है। अनुग्रह और परमेश्वर के वचन की आज्ञाकारिता को एक–दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता और उसके बाद उद्धार और परिवर्तन (बदलाव) को भी अलग नहीं किया जा सकता।

परमेश्वर का वचन हमारे जीवनों के तीन आयामों/पहलूओं को छूता है।

परमेश्वर के वचन को ऐसा रचा गया है कि यह हमारे मनों को परमेश्वर के वचनों, आज्ञाओं और रचनाओं से भर दे। जो हम सोचते हैं विशेषकर कल्पनाएं या सभावनाएं उन्ही पर हम जीवन का निर्माण भी करते है। रोमियों 12:1–2 हमें इसी बात को स्मरण दिलाता है कि, "इसलिए, हे भाइयों, मैं तुमसे परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित और पवित्र और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओं। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल चलन भी बदलता जाए जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।" (रोमियों 12:1–2) परमेश्वर का वचन हमारे ह्रदयों/मनों पर कब्जा करके उसे परमेश्वर की इच्छा की अधीनता में लाने वाला होता है। इसलिए जो हम इच्छा करते है वो हमारी परिकल्पानाओं पर ही आधारित होती है।

परमेश्वर के वचन को हमारी इच्छाओं को परमेश्वर की इच्छा के सदृश में बदलने के लिए रचा गया है; जिन सीमाओं को हम अपने ऊपर लगाते या बांधते है वही पर ही हमारे जीवन का निर्माण हो सकता है।

बाइबल इन तीनों आयामों/पहलुओं के विषय में बिल्कुल स्पष्ट है।

हमारे मन परमेश्वर के उस वचन में पांए जाए जिसे परमेश्वर ने प्रेरणा/श्वास द्वारा लिखित रूप में हमें दिया है और उसे सरंक्षित भी किया है, और साथ ही परमेश्वर के देहधारी वचन, यीशु मसीह में पाएं जाए। मत्ती 4:4 में यह लिखा है, "मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा।" व्यवस्थाविवरण 8:1–3; यूहन्ना 3:1–9, यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुझ

से सच–सच कहता हूँ, जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्में तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।" लूका 8:15 "पर अच्छी भूमि में के वे हैं, जो वचन सुनकर भले और उत्तम मन में सम्भाले रहते है और धीरज से फल लाते हैं।" 2. हमारी इच्छाएं और निर्णय परमेश्वर के वचनों और जीवित वचन के साथ बंधे हुए होने चाहिए। इब्रानियों 4:12 "क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित और प्रबल और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है; और प्राण और आत्मा को, और गाँठ–गाँठ और गूदे–गूदे को अलग करके आर–पार छेदता है और मन की भावनाओं और विचारों को जाँचता है।" 3. हमारी इच्छाओं को भी उसी वचन द्वारा बांधा जाना चाहिए लूका 8:21 उसने इसके उत्तर में उनसे कहा, "मेरी माता और मेरे भाई ये ही है, जो परमेश्वर का वचन सुनते और मानते है।" लूका 11:28 उसने कहा, "हाँ; परन्तु धन्य वे है जो परमेश्वर का वचन सुनते और मानते है।"

उपयोग/लागूकरण

1. आप अपने दृढ़–विश्वास को एक बार फिर से प्रतिबिंबित और पुष्ट (सदृढ़) करें कि बाइबल परमेश्वर का वचन है और अन्य दलों/सेनाओं के दल के साथ इस बात सहमत होते है कि केवल यही हमारे जीवन के विश्वास और अभ्यास का स्त्रोत और नियम है।
2. प्रतिदिन पवित्र आत्मा जो आपसे कहता है उसे सुने ताकि आपके जीवन के प्रतिदिन के ज्यादात्तर निर्णय उसके उपयोग (आज्ञाओं) के साथ बंधे हुए हो।
3. अपने मन और हृदय को अनुमति दे कि वे समर्पण से भर जाएँ जो निर्णय आपने किया है कि आपका जीवन बाइबल में बताई गए (प्रकाशित हुई) सीमाओं के अंदर ही रहेगा।